ANNUAL SECONDARY EXAMINATION, 2011

HINDI (हिन्दी)

समयः 3 घण्टे] **SET-A** **[पूर्णांक: 100**

सामान्य निर्देश :

1. इस प्रश्न पत्र के चार खण्ड हैं यथा क, ख, ग एवं घ। चारों खण्डों से सभी प्रश्न अनिवार्य है।

2. प्रश्नों के उत्तर प्रश्नों के साथ दिए गए निर्देश के आलोक में ही लिखें।

3. 1 अंक के प्रश्नों का उत्तर प्रत्येक एक शब्द या एक वाक्य में, 2 अंक के प्रश्नों के उत्तर प्रत्येक लगभग 40 शब्दों में, 3 अंक के प्रश्नों के उत्तर प्रत्येक लगभग 60 शब्दों में, 4 अंक के प्रश्नों का उत्तर प्रत्येक लगभग 80 शब्दों में, 5 अंक के प्रश्नों के उत्तर प्रत्येक लगभग 100 शब्दों में एवं 10 अंक के प्रश्नों का उत्तर लगभग 200 शब्दों में लिखें।

खण्ड-क : अपठित गद्यांश (20 अंक)

प्रश्न 1. नीचे दिये गये गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गये प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दीजिए:

सालों पहले कुशीनगर गया था। वहाँ बुद्ध की लेटी हुई प्रतिमा के पास खड़े होकर एक अलग किस्म का अनुभव हुआ। उस वक्त तो ठीक-ठीक नहीं समझ पाया था लेकिन बाद में मुझे महसूस हुआ कि वहाँ एक अलग तरह की शांति मिली थी। अब किसी भी बुद्ध प्रतिमा को देखता हूँ तो असीम शांति का अहसास होता है। वहाँ खड़े होकर आपको महसूस होता है कि उन्हें 'करुणा का महासागर' क्यों कहा जाता है। अक्सर सोचता हूँ असीम शांति कैसे हासिल हो सकती है। क्यों दुख को साधे बिना उसे पाया जा सकता है? आखिर बुद्ध ने जब दुख को साधा तभी तो वह असीम शांति अनुभव कर सके।

शायद बुद्ध की वजह से ही बौद्ध-धर्म या दर्शन ने दुख या मानवीय पीड़ा पर इतना विचार किया। दरअसल, बौद्ध धर्म या दर्शन तो पीड़ा और दुख से ही निकल कर आया था। बुद्ध का पूरा जीवन ही उस दुख और पीड़ा से जूझने में बीता। बुद्ध ने अपने पूर्वजों की तरह दुख को नकारा नहीं था। जीवन में दुख को स्वीकार करने की

वजह से ही वह उससे पार पाने की सोच सके और उस दुख से पार पाने के लिए तथागत ने किसी चमत्कार या करिश्मे का सहारा नहीं लिया।

सचमुच बुद्ध ने कोई चमत्कार नहीं किया। आमतौर पर धर्म और अध्यात्म की दुनिया तो चमत्कार को एक जरूरी चीज के तौर पर मानती रही है। हाल का उदाहरण 'मदर टेरेसा' का है। मदर को ही कैथोलिक चर्च ने चमत्कार के बिना संत कहाँ माना था ? बुद्ध भी अपने बेटे को खो चुकी और चमत्कार की आस में आयी माँ से कह सकते थे कि जाओ गाँव में किसी के घर से एक मुट्ठी चावल ले आओ जहाँ कोई मौत न हुई हो। अपने बेटे को खो चुकी माँ के लिए चमत्कार नहीं किया था। महज एक उदाहरण से समझा दिया था कि मौत या दुःख एक सच्चाई है उसे चमत्कार बदल नहीं सकते, साथ जीने की कोशिश करनी चाहिए।

इसलिए बुद्ध ही कह सकते थे कि जीवन है तो दुख है यानी आप दुख से बच नहीं सकते। यह भी बुद्ध ही कह सकते हैं कि जीवन है तो दुख है लेकिन उससे पार पाना ही जीवन है। उस दुख से पार पाने के लिए किसी भी शरण में जाने को नहीं कहते। वह तो 'आप दीपो भव' यानी अपने दीपक खुद बनो का मंत्र देते हैं।

मतलब दुख को भी निगाहों से देखो । दुख अगर अंधेरा है तो अपने दीपक से उस अंधेरे को हटाओ। किसी और दीपक की रोशनी में न तो अपने दुखों को हटाने के लिए दूसरी रोशनी का बाट जोहो । आज बुद्ध पूर्णिमा है। क्या हमें अपने दीपक और उसकी रोशनी में जिन्दगी को देखने की कोशिश नहीं करनी चाहिए?

प्रश्न :-

(क) इस पद्यांश का उपयुक्त शीर्षक दीजिए।

(ख) लेखक को बुद्ध की प्रतिमा के सामने कैसा अनुभव हुआ?

(ग) बुद्ध असीम शांति का अनुभव कब कर सके?

(घ) बुद्ध ने अपना पूरा जीवन किससे जुझने में व्यतीत कर दिया?

(ड.) दुख से पार पाने के लिए बुद्ध ने क्या किया?

(च) अपने मरे हुए बेटे को चमत्कार की आशा से आयी माँ को बुद्ध ने क्या कहा?

(छ) बुद्ध ने जीवन किसे माना है?

(ज) इस पद्यांश में दुख से पार पाने का क्या उपाय बताया गया है?

(झ) 'आप दीपो भव' का क्या अर्थ है?

(ञ) 'बाट जोहना' मुहावरे का वाक्य-प्रयोग द्वारा अर्थ स्पष्ट करें।

(ट) 'मौत' के दो पर्यायवाची शब्द लिखिए ।

(ठ) 'चमत्कार' का संधि-विच्छेद कीजिए ।

प्रश्न 2. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर उससे संबंधित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

मनुष्य पृथ्वी पर मानव जीवन के प्रारम्भ से ही प्रकृति के साथ संघर्षरत है। मानव, प्रकृति का ही पुत्र है। वह अपने जीवन की विभिन्न अवस्थाओं में प्राकृतिक नियमों से जुड़ा है, परन्तु प्रकृति को वश में कर लेने की उसकी सतत् चेष्टा रही है। मनुष्य जिसे अपनी विजय और प्रगति मानता है, 'इकोलॉजी' अर्थात् 'परिमंडल विज्ञान' की चर्चाओं से स्पष्ट है कि वह उसकी पराजय तथा आत्महनन की गाथा है। मनुष्य विगत दो-तीन वर्षों से प्राकृतिक संतुलन बिगाड़ने में बड़ी तेजी से आगे बढ़ रहा है, जो अव्यावहारिक है। आहार के नाम पर हम विष खा रहे हैं जो हमें सामूहिक आत्महत्या की ओर ले जा रहा है। विश्व में वन सम्पत्ति अति तीव्र गति से कम हो रही है। भारत के पूर्वांचल के राज्यों, तराई उत्तर प्रदेश, हिमाचल प्रदेश तथा कश्मीर में वनों की कटाई से भूमि आरक्षित हो रही है, बाढ़ को बढ़ावा मिल रहा है तथा ऋतु-चक्र बदल रहा है।

हमारी सरकारें इस बर्बादी के रास्ते पर चल रही हैं। यदि बीस वर्ष पूर्व राज्य पेड़ काटने से दस लाख रुपये अर्जित करता है, तो वह अब बीस गुना कमाना चाहता है। हाँ पहाड़ी क्षेत्रों में 'चिपको आन्दोलन' के तहत कुछ विरोध अवश्य हो रहा है। नये पेड़ कितने लग रहे हैं? इस प्रश्न के उत्तर में वनाधि कारी कंधे झटका देते हैं। सूई जैसी पत्तियों वाले 'फर' जैसे पौधे तो उगाए ही नहीं जा सकते। परिणामस्वरूप सदियों में पनपे घने प्राकृतिक वन दस-बीस वर्षो में ही काटे जा चुके हैं। पहाड़ियाँ कुरूप और नंगी हो गयी हैं।

लेखक को अपनी कश्मीर यात्रा से वापसी के समय ज्ञात हुआ कि तीन वर्ष पहले एक करोड़ की आमदनी होती थी वहाँ अब तीन करोड़ रुपये की होती है और अब दस हजार फुट की ऊँचाई पर ही जंगल बचे हैं। कुछ वर्षों बाद हम चौदह हजार फुट तक

पहुँच जाएँगे और उसके ऊपर केवल बर्फ से ढँके पर्वत हैं, वृक्ष नहीं। तब हम क्या करेंगे? इसका उत्तर नहीं है। स्वार्थी लोग लाखों रुपया अपनी जेबों में भूमि संरक्षण के नाम पर ही भर रहे हैं।

अपनी जरूरतों के लिए प्रकृति के साथ खिलवाड़, दिल दहला देने वाला है। हमारे देश में बहुत कम लोग ही जीवन की सुधरी अवस्था तक पहुँचे हैं कि लकड़ी, बिजली, पानी, अनाज, लोहा, कागज, कोयला, पेट्रोल, मकान, स्कूल सब कम पड़ने लगे हैं। फिर सब लोगों को अवस्था सुधारने तक तो सृष्टि का संतुलन पूरी तरह नष्ट हो जाएगा। हम कब तक धरती, नदियों, पहाड़ों, जंगलों, ऋतुओं को दूषित और विकृत करते रहेंगे? क्या प्रकृति इससे बंदला नहीं लेगी? इसी उधेड़बुन में लेखक ने आसमान की ओर देखा तो पाया कि छँटे हुए बादल फिर उमड़ आये हैं। ओले पड़ने लगे। शीघ्र सारी घाटी ओलों से ढँक गयी। जून के अंतिम सप्ताह में कश्मीर में पत्थरों जैसी सख्त बर्फ पड़ रही थी। गुलमर्ग, पहलगाम और श्रीनगर के सब लोग इस मौसम को असामान्य बता रहे थे। सब जगह एक ही आवाज थी - 'इस साल कहद (अकाल) पड़ेगा'।

लेखक सोच रहा था कि मनुष्य प्रकृति के साथ जितना अधिक हस्तक्षेप करेगा, पर्यावरण को उतना अधिक दूषित करेगा, प्राकृतिक सम्पदा का जितना विनाश करेगा उतनी ही अधिक बाढ़ आयेगी। विषैले जल में बीमारियाँ फैलेंगी। पहाड़ों के पत्थर टूटकर गिरेंगे, मौसम कुछ के कुछ होंगे ओर हम अपनी मौत का सामान इकट्ठा करते रहेंगे।

प्रश्न :-

(क) उपर्युक्त गद्यांश के लिए उपर्युक्त शीर्षक लिखिए ।

(ख) मनुष्य का प्रकृति के साथ क्या संबंध रहा है?

(ग) प्राकृतिक संतुलन बिगाड़ने का क्या दुष्परिणाम हो रहा है?

(घ) किस कारण प्राकृतिक सम्पदा नष्ट हो रही है?

(ङ) लेखक को कश्मीर यात्रा की वापसी पर क्या पता चला?

(च) किस-किस चीज की कमी पड़ने लगी है और क्यों?

(छ) प्रकृति के साथ मनुष्य का हस्तक्षेप करना क्या-क्या मुसीबतें लाएगा?

(ज) 'पर्यावरण' शब्द किस-किस शब्द से मिलकर बना है?

खण्ड ख : रचना (15 अंक)

प्रश्न 3. निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 200 शब्दों में निबंध लिखें :

(क) परोपकार :

(संकेत बिन्दु - परोपकार का अर्थ, परोपकार का महत्त्व, परोपकार से प्राप्त अलौकिक सुख, परोपकार के विविध रूप और उदाहरण, परोपकार में ही जीवन की सार्थकता।)

(ख) हम और हमारी धरती:

(संकेत बिन्दु-हम से तात्पर्य, धरती का अर्थ, हम और धरती दोनों से संबंध, प्राकृतिक सुन्दरता, धन-सम्पन्नता, सभ्यता और संस्कृति के विकास में सहायक।)

(ग) समय अमूल्य धन है :

(संकेत बिन्दु समय जीवन है, समय का सदुपयोग आवश्यक उचित समय पर उचित कार्य, उपसंहार।)

प्रश्न 4. अपने प्रधानाचार्य के पास निर्धन छात्र-कोष से पुस्तकें प्राप्त करने हेतु एक आवेदन पत्र लिखें।

अथवा

अपने मित्र को एक पत्र लिखिए, जिसमें किसी रमणीय स्थल का संक्षिप्त वर्णन किया गया हो।

खण्ड ग : व्यावहारिक व्याकरण (15 अंक)

प्रश्न 5. वाक्य में प्रयुक्त क्रिया-पद छाँट कर लिखिए:

(i) अमित को पढ़न में मन लगता है।

(ii) माँ भोजन पका रही हैं।

(iii) किसान फसल उगा रहा है।

प्रश्न 6. रिक्त स्थानों की पूर्ति अव्यय पदों से कीजिए:

(i) पहला प्रश्न कीजिए ..... दूसरा।

(ii) अच्छे चरित्र ..... जीवन निरर्थक है।

(iii) उसकी हालत ..... खराब है।

प्रश्न 7. निर्देशानुसार उत्तर दीजिए:

(i) संयुक्त वाक्य का एक उदाहरण दें।

(ii) हमें सबसे प्रेमपूर्वक रहना चाहिए। (क्रिया विशेषण छाँटकर लिखिए।)

(iii) जो व्यक्ति गुणी होता है, उसे सभी चाहते हैं। (आश्रित उपवाक्य अलग करके लिखिए।)

प्रश्न 8. निर्देशानुसार उत्तर दीजिए:

(i) माँ ने पुत्र को सुला दिया (कर्मवाच्य में बदलें)

(ii) बच्चा सोता है। (भाववाच्य में बदलें)

(iii) अशोक द्वारा पुस्तक पढ़ी जाती है। (कर्मवाच्य में बदलें)

प्रश्न 9. निर्देशानुसार उत्तर दीजिए:

(i) 'कमलनयन' का समास विग्रह कीजिए ।

(ii) 'तुरंग' के दो भिन्न अर्थ लिखिए।

(iii) 'वागीश' का संधि-विच्छेद कीजिए ।

खण्ड - घ : पाठ्य पुस्तकें (50 अंक)

प्रश्न 10. निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गये प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

हमारैं हरि हारिल की लकरी।

मन क्रम वचन नंदन उर यह दृढ़ करि पकरी

जागत सोवत स्वप्न दिवस, निसि कान्ह-कान्ह जकरी

सुनत जो लागत है ऐसौ ज्यौ करुई ककरी

सु तौ व्याधि हमको लै आए, देखो सुनी न करी

यह तौ सुर तिनहिं ले सौंपी, जिनके मन चाकरी

प्रश्न :

(i) कवि तथा कविता का नाम लिखिए ।

(ii) कौन, किसके लिये क्या हैं? क्यों?

(iii) गोपियों की दशा का वर्णन करें।

अथवा

घेर घेर घोर गगन, घराघर ओ ।

ललित-ललित काले घुँघराले,

बाल कल्पना के से पाले

विद्युत छवि उर में कवि नवजीवन वाले।

वज्र छिपा, नूतन कविता

फिर भर दो

बादल गरजो।

प्रश्न :

(i) कवि तथा कविता का नाम लिखिए।

(ii) कवि बादलों का आह्वान किस रूप में कर रहा है?

(iii) कविता का आशय स्पष्ट कीजिए ।

प्रश्न 11. निम्न में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

(क) "गोपियों ने अपने वाक्चातुर्य के आधार पर ज्ञानी उद्धव को परास्त कर दिया।" कैसे?

(ख) परशुराम के क्रोध करने पर राम और लक्ष्मण की जो प्रतिक्रियाएँ हुईं उनके आधार पर दोनों के स्वभाव की विशेषताएँ अपने शब्दों में लिखिए ।

(ग) 'कन्यादान' शब्द के द्वारा वर्तमान समय में कन्या के दान की बात करना कहाँ तक उचित है?

(घ) सफलता के शिखर पर पहुँचने के दौरान यदि व्यक्ति लड़खड़ाता है, तो उसे सहयोगी किस तरह संभालते हैं?

प्रश्न 12. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

(क) पठित पाठ के आधार पर कवि तुलसीदास के भाषा-सौन्दर्य पर संक्षिप्त प्रकाश डालिए ।

(ख) मृगतृष्णा किसे कहते हैं? 'छाया मत छूना' कविता में इसका प्रयोग किस अर्थ में हुआ है ?

अथवा

(क) हमें दूसरों की क्षमताओं को कम करके क्यों नहीं आँकना चाहिए?

(ख) 'संगीतकार' कविता में किस जीवन मूल्य को उभारा गया है?

प्रश्न 13. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर संबंधित प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

"फादर को जहरवाद से नहीं मरना चाहिए था। जिसकी रगों में दूसरों के प्रति मिठास भरे अमृत के अतिरिक्त कुछ नहीं था, उनके लिये जहर का विधान क्यों? यह सवाल किस ईश्वर से पूछें? प्रभु की आस्था ही जिसका अस्तित्व था वह देह की इस यातना की परीक्षा उम्र की आखिरी देहरी पर क्यों दे? एक लम्बी, पादरी के सफेद चोंगे से ढँकी आकृति सामने है- गोरा रंग, सफेद झाई भरी भूरी दाढ़ी. नीली आँखें बाँहें खोल गले लगने को आतुर । इतनी ममता. इतना अपनत्व। इस साधु में अपने हर एक प्रियजन के लिये उमड़ता रहता था। मैं पैंतीस साल से इसका साक्षी था। तब भी जब वह इलाहाबाद में थे और तब भी जब वह दिल्ली आते थे। आज उन बाँहों का दबाव मैं अपनी छाती पर महसूस करता हूँ।"

प्रश्न :

(क) जहरवाद किस रोग को कहते हैं?

(ख) लेखक क्यों कहते हैं कि फादर का जहरवाद से नहीं मरना चाहिए था?

(ग) 'फादर कामिल बुल्के' के व्यक्तित्व को अपने शब्दों में लिखिए ।

अथवा

"बेटे के क्रियाकर्म में तूल नहीं दिया, पतोहू से ही आग दिलाई उसको। किन्तु ज्यों ही श्राद्ध की अवधि पूरी हो गई, पतोहू के भाई को बुलाकर उसके साथ कर दिया, यह आदेश देते हुए कि इसकी दूसरी शादी कर देना। उनकी जाति में पुनर्विवाह कोई नयी बात नहीं, किन्तु पतोहू का आग्रह था कि वह यहीं रहकर भगत जी की सेवा बंदगी में अपने वैधव्य के दिन गुजार देगी। लेकिन भगत जी का कहना था-नहीं, अभी यह जवान है, वासनाओं पर बरबस काबू पाने की उम्र नहीं है इसकी। मन मतंग है, कहीं इसने गलती से ऊँच-नीच में पैर रख दिये तो नहीं-नहीं तू जा। इधर पतोहू रो-रो कर कहती मैं चली जाऊँगी तो बुढ़ापे में कौन आपके लिये भोजन बनाएगा. बीमार पड़े तो कौन एक चुल्लू पानी भी देगा? मैं पैर पड़ती हूँ, मुझे अपने चरणों से अलग नहीं कीजिए। लेकिन भगत का निर्णय अटल था। तू जा, नहीं तो; मैं ही इस घर को छोड़कर चल दूँगा । यह उनकी आखिरी दलील और इस दलील के आगे बेचारी की क्या चलती ?"

प्रश्न :

(क) पाठ तथा लेखक का नाम लिखिए।

(ख) बालगोबिन भगत ने बेटे का क्रिया-कर्म किस प्रकार करवाया?

(ग) श्राद्ध की अवधि पूरी होने पर बालगोबिन ने क्या किया? क्या यह उचित था?

प्रश्न 14. निम्नलिखित में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

(क) भगत के व्यक्तित्व और उनकी वेशभूषा का अपने शब्दों में चित्र प्रस्तुत कीजिए|

(ख) 'लखनवी अंदाज' पाठ में लेखक को नवाब साहब के किन हाव-भावों से महसूस हुआ कि वह उनसे बातचीत करने के लिये तनिक भी उत्सुक नहीं हैं?

(ग) 'नौबतखाने में इबादत' पाठ में आये किन प्रसंगों के आधार पर आप कह सकते हैं कि बिस्मिल्ला खाँ मिली-जुली संस्कृति के प्रतीक थे?

(घ) बालगोबिन भगत की दिनचर्या लोगों के अचरज का कारण क्यों थी?

प्रश्न 15. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

(क) आपके विचार से फादर ने भारत आने का मन क्यों बनाया होगा?

(ख) काशी में हो रहे कौन से परिवर्तनप 'खाँ' जी को व्यथित करते थे?

अथवा

(क) सेनानी न होते हुए भी चश्मे वाले को लोग कैप्टन क्यों कहते थे?

(ख) तब की शिक्षा प्रणाली अब की शिक्षा प्रणाली में क्या अंतर है?

प्रश्न 16. 'माता का आँचल' शीर्षक कहानी में माता-पिता का अपने बच्चों के प्रति जो वात्सल्य व्यक्त हुआ है, उसे अपने शब्दों में लिखिए।

अथवा

नाक मान-सम्मान व प्रतिष्ठा का द्योतक है। यह बात पूरी व्यंग्य रचना में किस तरह उभरकर आयी है? लिखिए।

प्रश्न 17. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं तीन के उत्तर दीजिए :

(क) भोलानाथ अपने साथियों को देखकर सिसकना क्यों भूल गया ?

(ख) 'जॉर्ज पंचम' की नाक लगने वाली खबर के लिए अखबार वाले चुप क्यों थे?

(ग) 'गंतोक' को 'मेहनतकश बादशाहों का शहर' क्यों कहा गया है?

(घ) सैलानियों को प्रकृति की आलौकिक छटा का अनुभव करवाने में किन-किन लोगों का योगदान होता है। उल्लेख करें।